Result Mitra Daily Magazine

गिब्बन वानर के आवास स्थलों में रेलवे ट्रैक के आस पास रेलवे कैनोपी पुल का निर्माण करेंगा

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (एनएफआर) ने (विश्व भर में पाई जाने वाली 20 गिब्बन प्रजातियों में से एक गिब्बन वानर जो भारत में एक मात्र इसकी प्रजाति है) पूर्वी असम में उनके प्रमुख निवास स्थानों से गुजरने वाली रेलवे ट्रक के ऊपर उनके आवागमन हेतु कैनोपी पुलों के निर्माण के लिए धनराशि और मंजूरी प्रदान की है।
- इन कैनोपी पुलों का डिजाइन भारतीय वन्यजीव संस्थान (डब्ल्यूआईआई) द्वारा तैयार किया गया है।
- **निर्माण कार्य :-** पूर्वी असम के जोरहाट जिले में 2,098.62 हेक्टेयर में फैले होलोंगापार गिब्बन अभयारण्य जिसे 1.65 किलोमीटर लंबा ट्रैक (मरियानी-डिब्रूगढ़ रेलवे ट्रैक) दो भागों में विभाजित करता है।
- इस रेलवे ट्रैक को अपनी लम्बाई में दोगुना और इसका विद्युतीकृत किया जाना है। अत: निर्माण कार्य व् उसके बाद यहां के स्थानीय वन्यजीव के साथ विशेषता गिब्बन वानर के लिए इस तरह के पुलों का निर्माण किया जा रहा है।
- उल्लेखनीय है कि इस अभयारण्य में हूलॉक गिब्बन की सबसे बड़ी संख्या है, जो पृथ्वी पर वानरों की कुल 20 प्रजातियों में से एक है।
- **पहल का उद्देश्य :-** असम के जोरहाट जिले में स्थित इस पहल का उद्देश्य जंगल में लुप्तप्राय हूलॉक गिब्बन के सुरक्षित मार्ग को सुगम बनाना है, रेलवे लाइनों द्वारा उत्पन्न जोखिमों को कम करना भी एक महत्वपूर्ण पहलू है।

-

कैनोपी पुल के बारे में

- यह पुल सड़क के दोनों ओर दो या दो से अधिक बड़े पेड़ों को जोड़ता है, जिससे वन्यजीवों, विशेषकर प्राइमेट्स को जंगल के एक भाग से दूसरे भाग में जाने में सुविधा होती है, तथा इससे सड़क या रेलवे दुर्घटनाओं में कमी लाने में मदद मिलती है।
- **नामकरण :-** उल्लेखनीय है कि कैनोपी वनों में वनस्पति का वह ऊपरी भाग है जिसमें वृक्षों के शीर्ष एक प्रकार की छत बनाते हैं।

होलोंगापार गिब्बन अभयारण्य

- होलोंगापार गिब्बन अभयारण्य , जिसे पहले गिब्बन वन्यजीव अभयारण्य या होलोंगापार आरक्षित वन के नाम से जाना जाता था, भारत के असम में जोरहाट जिले में स्थित सदाबहार वन का एक संरक्षित क्षेत्र है।
- 27 अगस्त 1881 को इसे एक " रिजर्व फॉरेस्ट " (आरएफ) के रूप में घोषित किया गया था।
- बाद में इस अभयारण्य का आधिकारिक रूप से गठन और नाम बदलकर होलोंगापार गिब्बन अभयारण्य 1997 में किया गया था।
- इसके जंगल पटकाई पर्वत श्रृंखला की तलहटी तक फैले है।
- होलोंगापार गिब्बन अभयारण्य में भारत की एकमात्र वानर गिब्बन प्रजाति - हूलॉक गिब्बन और पूर्वोत्तर भारत का एकमात्र रात्रिचर प्राइमेट - बंगाल स्लो लोरिस पाया जाता है।
- इस अभयारण्य का नाम इसकी प्रमुख वृक्ष प्रजाति, होलोंग या डिप्टेरोकार्पस मैक्रोकार्पस के नाम पर रखा गया।
- इसी डिप्टेरोकार्पस मैक्रोकार्पस वृक्ष प्रजाति के शीर्ष (कैनेपी) पर हूलॉक गिब्बन निवास और आवागमन करते है।

हूलॉक गिब्बन

- इन्हें वानरों की प्रजाति में सबसे छोटा और तेज माना जाता है।
- ये वानर विशेषता दक्षिण-पूर्व एशिया के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जंगलों में रहते हैं।
- हूलॉक गिब्बन विश्वभर में पाई जाने वाली 20 गिब्बन प्रजातियों में से एक हैं। जो कि भारत की एकमात्र वानर प्रजाति भी है।

भारत में गिब्बन वानर की प्रमुख प्रजातियाँ

पश्चिमी हूलोक गिब्बन

- इसे हूलोक हूलोक के नाम से भी जाना जाता है।
- यह पूर्वोत्तर भारत के सभी राज्यों में पाया जाता है।
- भारत के पडोशी देशों पूर्वी बांग्लादेश और उत्तर-पश्चिमी म्यांमार में भी इसकी प्रजाति पाई जाती है।
- इस प्रजाति को आईयूसीएन की रेड लिस्ट में लुप्तप्राय श्रेणी में रखा गया है।

पूर्वी हूलॉक गिब्बन

- यह भारत में अरुणाचल प्रदेश और असम, दक्षिणी चीन और उत्तर-पूर्वी म्यांमार के विशिष्ट भागों में निवास करता है।
- इसे IUCN की लाल सूची में संवेदनशील के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।
- भारत में, दोनों प्रजातियाँ भारतीय (वन्यजीव) संरक्षण अधिनियम 1972 की अनुसूची 1 में सूचीबद्ध हैं।

Result Mitra

बंदर और वानर प्राइमेट में अंतर

- ये दोनों ही मानव परिवार के हिस्से हैं।
- इनके बीच प्रमुख अंतर पूंछ की मौजूदगी या अनुपस्थिति होती है।
- सभी बंदरों की जहाँ पूंछ होती है, वही वानरों में इसकी अनुपस्थिति होती है।
- शरीरिक संरचना के आधार पर देखा जाए तो बंदर आमतौर पर छोटे और सकरी छाती वाले होते हैं, जबकि वानर लम्बाई में बड़े होते हैं और उनकी छाती और कंधे के जोड़ चौड़े होते हैं जो उन्हें पेड़ों पर झूलने में मदद करते हैं।

उदाहरण

- वानर :- गोरिल्ला, गिब्बन, ओरंगुटान
- बन्दर :- लंगूर

Result Mitra